अपराध किस का

के. पी. मुहम्मदकुट्टी

श्रम गगन के मुख की शोभा कम होने लगी। वह बूढ़ा दिन कर अरब समुद्र में डूबा है। गगन माता की गोद खून से भरे हुये मेघ चलते फिरते हैं। इस चिता की ग बुझने लगी। फिर भी मेरी शान्ता की आत्मा की तरह उस से आकाश की ओर चलता है। अंधकार खूब नहीं ा। इस लिये है एक सृंगाल किसी तरह की आवाज़ ये बिना दौड़ कर झाड़ियों में घूस गया। चारों ओर ाटा राज करता था।

इस श्मशान में जीवित रहने वाला एक आदमी मैं ही । हर एक आदमी अपनी राह चला। उन को सोचने लिये कुछ भी नहीं। क्यों कि ईश्वर के समान मृत्यु भी -घट वासी है। उस के बलिष्ठ हाथों से बचने वाला ई नहीं। अपने काम करने के लिये उस को किसी का न नहीं चाहिए। फिर क्यों मरे हुए लोगों के लिये रोना हिए! वे लोग यह कह कर शान्त हो जाएँगे। लेकिन ी हालत यह नहीं। मेरे लिये शान्ति कहाँ है? अपनी न्ता की मृत्यु मेरे लिये एक मामूली मृत्यु नहीं। ठीक कहूँ वह मृत्यु नहीं, हत्या है। इस दुष्ट समाज ने उस की ेया की; इस दुष्ट समाज के बिगड़े लोगों ने!

* * *

उस दिन सबेरे मैं अपने कमरे में अखबार पढ़ रहा था। हर ठण्डी हवा चल रही थी। साथ ही पानी बरसता । रात भर घोर वर्षा हो रही थी। अब उस की क्ति तो बिलकुल खतम हो गयी थी। लेकिन बाहर जाना लकुल मुश्किल था। समय सात बजे हो गये थे। फिर स्नान नहीं किया। धूम-पान करके बिस्तर पर लेटना ड़ा आनन्द है। यदि कोई काम नहीं तो जीवन भर ऐसे, ख का अनुभव कर सकता हूँ। लेकिन मुझे काम है इस ये लगातार ऐसा सुख मुझे नहीं है।

"डुम डुम.....डुम डुम.....डुम डुम.....।"

हो! सुख की रस्सी काटने के लिए दूध लाने वाली न्नम्मा आयी है। मैं इस लोड्ज में दो साल पहले रहने ा। तब से अभी तक नींद से मुझे जगाने वाली चिन्नम्मा हैं। वह छः बजे के पहले ही यहाँ दूध लेकर आती हैं। किन आज देर हो गयी। क्यों? हो! मालूम हो गया बरसात के कारण देर हो गयी। बेचारी स्त्री! उन्हों ने ा था कि मेरी अवस्था पच्चास वर्ष की हो गयी। इस स्था में दूध लेकर चलने की दुस्थिति उन की है। जीवन लाने के लिए वही एक मार्ग है। चिन्नम्मा ने कहा था कि ी एक बेटी है। लेकिन मैं ने उस को अभी तक नहीं ा। उन्हों ने कहा था कि बेटी एक धनी घर की नौकरानी । घर का मालिक उस देश का अमीर है। उन की अवस्था लग-भग पच्चास वर्ष की होगी। उन का एक ही बेटा है—राजन। वह एक अच्छा जवान आदमी है। अमीर लोगों का घमण्ड उस में बिलकुल नहीं। वह भी मेरे साथ एम. बी. बी. एस. के लिए पढ़ता है। वह तो एक सरल आदमी है। लेकिन राजन के पिता ने अपने धन के साथ कुछ घमण्ड भी कमाया है।

"डुम डुम.....डुम डुम.....।"

अब सोचने के लिए समय नहीं। उस बेचारी विधवा को उस ठण्ठी हवा में खड़ा होना बिलकुल कठिन है। इस लिए मैं ने दरवाज़ा खोलकर बाहर देखा तो क्या देखा। वहाँ सोलह वर्ष की एक सुन्दर लड़की खड़ी थी। वह बिलकुल ग्रामीण सौन्दर्य का प्रतीक थी। उस के हाथ में एक बर्तन जिस में दूध था। मुझे ऐसा लगा कि उस का शरीर सोने से बना हुआ था। उस की आँखें आसमानी, मीनाकृति, सजल और बड़ी-बड़ी थी। न जाने क्यों उन आँखों ने मेरे दिल में आनन्द रूपी अमृत भर दिया।

"चिन्नम्मा की बेटी है न? माँ कहाँ है?" मैं ने उस सन्नाटे के कुए में पत्थर डाला। उस के कोमल गले से निकला कि माँ की तबीयत अच्छी नहीं।

"रोग क्या है?" मेरा शब्द जिज्ञासा से भरा हुआ था। उस कोमलवाणी ने कहा कि डरने की तो कोई बात नहीं। मामूली ज्वर हैं। बेचारी स्त्री! उस की यह हालत है? गरीबों को ही ईश्वर कष्ट देता है।

"साहब, मुझे जाना है।"

उस की उस शिकायत ने मुझे चिन्ता की रस्सी से बने हुए पुल पर से गिरा दिया। मैं ने कहा—"अच्छा, जाओ। हो! मैं भूल गया। तुम्हारा नाम क्या हैं?" वह अपना सिर नीचा करके बोली—"शान्ता।"

शान्ता! कितना अच्छा नाम है! इस की तरह मेरी एक बहन थी—सुबेदा। लेकिन ईश्वर ने उस को अपने पास बुलाया। सुबेदा और शान्ता! शान्ता और सुबेदा! कितने मधुर नाम हैं। दोनों मेरे लिए एक तरह हैं। मेरी सुबेदा की जगह अब शान्ता आयी है। हे ईश्वर, तुम बड़े दयालू हो।

"शान्ता, तुम मुझे साहब कह कर मत पुकारो। मैं तुम्हारा भाई हूँ। सिर्फ भाई। यह मेरी प्रार्थना हैं कि मुझे भाई कह कर पुकारो। क्या तुम को मुझे भाई की जगह रखना पसन्द है न?" मैं ने जिज्ञासा भाव से पूछा। तब मैं ने देखा कि उस की बड़ी-बड़ी आँखें आश्चर्य से भरी हुई थी।

उस का भाई नही था। किसी को भाई कह कर पुकारने का भाग्य उस को नहीं हुआ था। अब उस को एक

भाई मिला। वह आनन्द से नाच उठती थी। अब उस को एक भाई मिल गया। इस से बढ़ कर भाग्य क्या है? उस की आँखें आनन्द से सजल हो गयी।

"शान्ता, क्या, तुम को मुझे भाई की जगह रखना पसन्द है न?" मेरी ध्वनि जिज्ञासा से भर गयी। उस ने तुरन्त उत्तर दिया कि 'हाँ भाई साहब, मुझे पसन्द है।' यह सुन कर मेरा गला आनन्दाश्रु से भर गया। तुरन्त मुझे याद आ गयी कि बड़ी देर हो गयी। मैं ने उस से कहा कि दूध का बर्तन मेज़ पर रख कर जाओ। मुझे नहाना है और काम करना है। यह सुन कर शान्ता ने दूध का बर्तन मेज़ पर रखा और बाहर गयी।

उस दिन से शान्ता रोज़ बड़े सवेरे दूध लेकर आती थी और मेरे साथ खूब बातचीत करती थी लेकिन मेरे दौर्भाग्य से उस बात का खूब प्रचार हुआ कि मेरे साथ शान्ता का बन्ध असान्मार्गिक है नहीं। लेकिन मैं ने उस की परवाह नहीं की। अभी चिन्नम्मा रोग से मुक्त नहीं हो गयी थी।

इस तरह आठ महीने बीत गये। तब मैं ने देखा कि आजकल शान्ता उदास भाव से काम करती है। उस के चेहरे पर संतोष का निशाना भी नहीं। उस के गुलाब की तरह के कपोल आजकल रक्तहीन दिखाई पड़ते हैं। उस को क्या हो गया? उस का हर्षोल्लास कहाँ गया? एक दिन मैं ने उस से पूछा कि शान्ता आजकल तुम को क्या हो गया? तुम्हारा हर्षोल्लास कहाँ गया? यह सुनते ही वह फूट-फूट कर रोने लगी। और बाहर निकली। उस ने कुछ जवाब न दिया। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया। मैं विस्मय से स्तंभित हो गया।

उस दिन के बाद वह फिर कभी दूध नहीं लायी। फिर उस ने एक लड़के के द्वारा दूध भेजने लगी। उस का मतलब मैं ने कुछ नहीं समझा। मैं हताश हो कर शान्ता की प्रतीक्षा करने लगा।

एक दिन मैं ने सुना कि शान्ता को मालिक के घर से निकाल दिया हैं। इस का कारण यह है कि अब वह सात महीने की गर्भावस्था में है। मैं ने यह भी शिकायत सुनी कि उस गर्भस्थ शिशू का पिता मैं हूँ! यह सुन कर मैं स्तब्ध हो गया। क्या शान्ता सचमुच गर्भावस्था में है? तो उस शिशू का पिता कौन है? यह स्पष्ट है कि मैं नहीं। लेकिन बुद्धिहीन समाज ने अपराध मेरे ऊपर डाला। यह मैं कभी सह नही सकता। मैं मेरे कमरे में जा कर चिन्ता में डूबा। तब किसी की आहट सुन कर मैं ने अपना सिर उठाया। तब मैं ने क्या देखा! मेरी बहिन शान्ता दौड़ कर आ रही थी। वह ज़ोर से अन्दर आ गयी और मेरे पैरों को पकड़ कर रोने लगी। मैं ने तुरन्त उसे उठाया और उस के कोमल कपोलों से आँसू का निर्मांजन किया। मैं ने जिज्ञासा के साथ पूछा कि शान्ता, तुम को क्या हो गया? क्या यह ठीक है कि तुम गर्भिणी हो? यह सुनते ही वह और ज़ोर से रोने लगी। रोने के बीच में उस ने कहा कि मेरा सर्वनाश हुआ भाई साहब, मेरा सर्वनाश हुआ। आप ने जो सुना वह ठीक ही है। लेकिन यकीन मानिए भाई साहब, मैं उस में अपराधिनी नहीं हूँ। बुरी चिन्ता से भरा हुआ आदमी भेड़िये की तरह है। उस जानवर के सामने यह दुर्बल अभागिनी बहिन क्या कर सकती है? मुझे क्षमा दीजिए भाई साहब कि आप के अपमान का कारण मैं हूँ। क्षमा कीजिएगा।

मेरी आँखें क्रोध से लाल हो गयी। मुझे उस मानव-जानवर का नाम सुनना चाहिए। मैं ने शान्ता से ऊँचे स्वर में पूछा कि शान्ता, सच सच बताओ उस ने कहा कि वह मुझ से मत पूछिए। मैं उस का नाम कभी नही बताऊँगी। तब मेरा गुस्सा शान्ता के ऊपर पड़ा। मैं ने ऊँचे स्वर में कहा कि यदि मैं तुम्हारा भाई हूँ तो उस का नाम बताओ। नहीं तो मैं तुम्हारा भाई नहीं। जाओ, बाहर जाओ। मुझे तुम्हारा चेहरा भी नहीं देखना चाहिए। यह कह कर मैं उस के सामने से चला। तब उस ने कहा कि मैं उस का नाम बताती हूँ, भाई साहब। वह है मेरा मालिक। मैं जाती हूँ। दूर-दूर जाती हूँ। मैं कभी आप के ऊपर कीचड़ नहीं डालूँगी। मुझे आशीर्वाद दीजिए। वह आशीर्वाद के लिए नहीं ठहरी। वह रोकर बाहर दौड़ी। वह सड़क पर कुछ नहीं देख सकी। उसी दम एक 'लोरी' तेजी आ रही थी। हाय! अगले क्षण में बेचारी उस के नीचे आ कर दब गयी। चिल्लाने का भी अवकाश न मिला। उस का देही देह से निकल कर परलोक की ओर उठ गया।

* * *

आज भी लोग कहते हैं कि मैं ने ही वह नीच कार्य किया। लेकिन ईश्वर सब जानता है। शान्ता के मालिक का समाज में ऊँचा स्थान हैं। इस लिए उन की ओर घृणा के साथ कोई नहीं देख सकता। मैं तो एक गरीब हूँ। इस लिए सब लोग मेरी पीठ पर सवार होते है।

हो! सोचते-सोचते अंधकार चारों ओर फैल गया। अब यहाँ खड़ा होना ठीक नही। अब घर जाना चाहिए। माँ घर में मेरी प्रतीक्षा करती होगी।

भारत और चीन

के. एम. एन. नम्बूतिरि

रत और चीन का बंध आज का न होकर अत्यंत पुराना है। दो हज़ार वर्ष पहले से ही भारत और चीन दोनों व्यापार विनिमय हुआ था। भारत के प्रसिद्ध प्राचीन विद्यालयों में दीक्षा लेने के लिए चीन से अनेक स्नातक गये थे। नालन्दा, तक्षशिला आदि विद्यापीठों में अनेक विद्यार्थी वर्षों तक रह कर भूगोल, इतिहास, चिकित्सा स्त्र, अर्थशास्त्र, तर्क, वेदान्त आदि पढ़ते रहे। भारत के , लकड़ी आदि की बनी चीज़ों का चीन में अच्छा बाज़ार था। इस तरह चीन के, संसार की अत्यंत बड़ी भित्ति के ाता युवान-टी से लेकर चला आया हुआ भारत चीन ी-बन्ध, चीनी यात्री फाहियान और ह्वानसांग के द्वारा होता रहा।

१९४७ में भारत और '४९ में चीन स्वतंत्र हुए। के बाद भारत के प्रधान मंत्री नेहरू ने चीन में सैर की अपनी मैत्री चीन से, अधिक दृढ़ की गयी। चीन न मंत्री चु-एन-लाइ के प्रति-सन्दर्शन से, यह मैत्री इतनी हो गयी कि भारत और चीन से यह नारा लगाया गया, न्दी-चीनी भाई-भाई।"

भारत ने अहिंसा के प्रवाचक बुद्ध को जन्म दिया है; ने गान्धीजी के अहिंसात्मक मार्ग को अपना मार्गदीपक ा दिया है। भारत इस लिए अहिंसा और सह-अस्तित्व ोड़ कर धोखा देना नहीं जानता। भारत विश्वभर में त चाहता है। इसी सिद्धान्त का प्रचार करने एवं र करने के उद्देश्य से "बन्दूँग" में आफ्रो-एशियन स्वाधीन ों राज्यों का सम्मेलन बुलाया गया, जिस में भारत और दोनों ने मिल कर "पंच शील तत्व" प्रस्तुत कर दिया सभी राष्ट्रों ने उस का सहर्ष स्वागत भी किया है।

अधिक वर्ष नहीं बीते। चीन ने पंचशील तत्वों का ध्वंस अपना वास्तविक रूप दिखा दिया, जिसे देख दुनियाँ भी त हुई। चीन ने, एक ओर शान्ति और सह-अस्तित्व ाचाल भाषण करते-करते, दूसरी ओर अपने साम्राज्य ार का काम भी करता रहा। आज संसार को मालूम है कि चीन "पंचशील" की हिरण की खाल डाले न थीं।

चीन अपने राज्य की चारों ओर के बर्मा, भारत, रूस, लिया, औटर-मंगोलिया आदि राष्ट्रों से जहाँ तक हो उतना प्रदेश अपने साम्राज्य में मिलाने का प्रयास कर है। अपितु, संसार उस के पक्ष में नहीं है। चीन ने त की उत्तरी सीमा में अपने पूर्ण सैनिक बल को लेकर नग्न आक्रमण ही कर डाला है। उस प्रश्न का अभी नहीं हुआ है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर हिमालय एक भारत का पवित्र स्थान है जिसे चीन ने अपनी लालसा से अपवित्र बना दिया है। भारत के कुछ प्रदेश चीन ने अभी हड़प लिया है। ऐसा प्रपंच भारत ने—जो पारस्परिक स्नेह और सह-अस्तित्व में विश्वास करता है—स्वप्न में भी न सोचा था।

भारत को बल से उसे रोकना पड़ा। हम स्नेह के अलावा कुछ नहीं जानते। फिर भी, जिन भारतीय वीरों ने अभी तक पराजय नहीं जाना था, उन आतताइयों को सधैर्य रोक लिया। जब चीनियों को मालूम हुआ कि आगे बढ़ना मुश्किल है, और अलबेनिया को छोड़ कर अन्य कोई भी लोक राष्ट्र उन के पीछे नहीं, तब वे स्वयं पीछे हटे। उस के बाद "कोलंबो-सम्मेलन" में जो प्रस्ताव पास किया गया, उसे यद्यपि भारत ने स्वीकार लिया, तथापि चीन ने पूर्ण रूप से नहीं माना।

हम एक लड़ाई के लिए तैयार न थे। इस लिए कभी-कभी हमारी हार हुई। बाद को अमेरिका की मदद मिलने के बाद हमारी हालत बेहतर हो गयी। आज राष्ट्र पूर्वाधिक अच्छी हालत में है। इस का, सब से बड़ा कारण भारतीय जनता की एकता और त्यागशील ही है।

चीन के इस निन्द्य आक्रमण के कारण भारत की नस-नस में आघात पहुँचा है। सरकार की पंचवर्षीय योजना को भी इस से ज़रा हानि पड़ी है। इन सबों से प्रधान चीज़ यह है कि आक्रमण के कारण, दो-हज़ार वर्षों से अधिक चली आयी हुई दृढ़-मैत्री की जड़ हिलने लगी।

जो भारत "संयुक्त राष्ट्र संघ" में चीन के अंगत्व के लिए वाद कर रहा है, उसी भारत पर ही चीन ने ऐसा आक्रमण किया है। फलस्वरूप, भारत और चीन के बंध में मन-मुटाव होना स्वाभाविक मात्र है।

आशा कर सकते हैं कि भारत-चीनी सरहदी प्रश्न का हल शीघ्र होगा। दोनों राज्यों की मैत्री नहीं नष्ट होनी है, इस के बदले चीन को साम्राज्य विस्तार की लालसा ही नष्ट होनी है। नहीं तो हम कह नहीं सकते कि यह वही चीन है जिस ने बौद्ध धर्म का स्वागत किया है और जो इतिहास के विषय में पुराने ज़माने में भी मशहूर है। हम प्रतिज्ञा करें कि दो हज़ार वर्षों से अधिक लंबी मैत्री, जो आज टूट गयी है, फिर कायम होगी।

यदि वह अपना दंभ लालच और चालबाज़ी छोड़ने को तैयार नहीं तो भारत के सपूत भी अपनी जाँनिसारी का मार्ग अपनायेंगे और बालि पथ पर से चल कर जननी जन्म भूमि की लाज रखेंगे। ईश्वर करे। मार्ग दीपक दिखा दिया।

चन्द्रमुखी

पी. आली, I B. Sc.

"नानी, कहानी सुनाओ !"

नानी के पास ही बैठ कर मैं ने अनुरोध किया। नानी ने बैठ कर तमाखू चबाते हुए मेरी ओर देखा। इन के मुँह में कोई दाँत नहीं। लेकिन जब उस पोपले मुँह से हँसी बाहर निकलती है तब उन के चेहरे पर एक ज्योति फैलती है।

"ज़रा कहानी सुनाओ नानी।" मैं ने फिर कहा।

"कौन-सी कहानी बच्चा ? राजकुमारी की.....?"

"नहीं।"

नानी की हमेशा एक राजकुमारी है ! राजकुमारियों की कहानी सुन कर मेरे कान थक गये।

"नानी, अब तुम एक गरीब लड़की की कहानी सुनाओ।" उन के पास बैठ कर मैं ने उस मुँह की ओर ताकने लगा।

"अच्छा, अब एक सरल लड़की की कहानी सुनो।" नानी ने पान पर चूना पोत कर अपने गहरे मुँह में डाला। मैं एक अच्छी कहानी की प्रतीक्षा में अनिमेष बैठा रहा।

"पुराने ज़माने में, बहुत दूर देश में चन्द्रमुखी नाम की एक लड़की थी।"

नानी कहने लगी। उस की सब कहानियाँ बहुत दूर-दूर के एक अजीब देश में होती हैं। 'किस देश में' का सवाल नहीं।

"चन्द्रमुखी बहुत सरल और अच्छी लड़की थी। छुटपन में ही उस की माँ का देहाँत हो गया। उस की प्यारी माँ मर गयी। बड़ा कष्ट है न बच्चा ?"

"हाँ नानी," मुझे अपनी माँ की याद आ गयी और एकाएक आँखों में पानी भर गया। मेरी माँ कितनी अच्छी है ! मेरा लालन-पालन करती है, नहलाती है, नया कपड़ा पहनाती है और बाल संवारती है। लेकिन चन्द्रमुखी की माँ मर गयी। अभागिनी चन्द्रमुखी !

"आगे सुनाओ नानी।"

"और चन्द्रमुखी के पिता उस के लिए एक और पत्नी लाये। कुछ दिनों के अन्दर इस विमाता का वास्तविक रंग बाहर प्रकट हुआ। वह हमारी सरल चन्द्रमुखी से घृणा करने लगी। निस्सार बातों के लिए इस विमाता दाँत किडकिडा कर चन्द्रमुखी को मारने लगी। उस की गाली सुन कर चन्द्रमुखी थक गयी। उस को चिढ़ाने में नयी विमाता को आनन्द हुआ। पिता से शिकायत करने से कोई फायदा नहीं था। इस नव माता के विरुद्ध उस पिता ने कुछ नहीं किया।

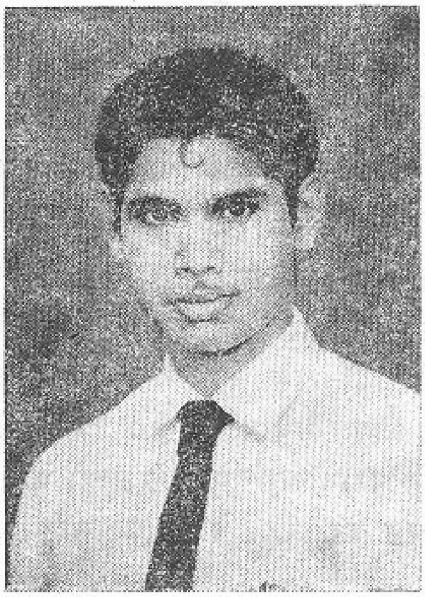

लेखक

कालचक्र ने अकेले दुकेले भ्रमण किया। कई वसंत आ गये। चन्द्रमुखी एक सुन्दर तरुणी हो गयी। चन्द्रमुखी को सजाने में प्रकृति ने अपने सुन्दर से सुन्दर रंग का उपयोग किया। लेकिन वह दुखी है। अपनी दयाशून्य विमाता की बाधा से उस को बचाने के लिए खुदा के अलावा कोई नहीं था। इस लिए चन्द्रमुखी अपनी सारी मुश्किलों को ईश्वर के सामने समर्पण करके सदैव निर्मल दिल से रही। अपना सारा समय ईश्वर के ध्यान और प्रकीर्तन में बिताने लगी।

अचानक एक मूक रात्रि में जब चन्द्रमुखी ईश्वर के ध्यान में लगी थी तब एक अलौकिक ज्योति उस के सामने आ पहुँची। वह एक देव कन्या थी। उस सुर कन्या ने चन्द्रमुखी को कई अमोल चीजें दी। एक सुन्दर अंगूठी, एक जोड़ी सुनहले जूते और एक अचकन दे दिये और कहा— "बेटी, तुम अच्छी हो और ईश्वर तुझ पर पसंद है। कल राजमहल के उत्सव में ये जूते पहन कर तुम भी जाओ।" यह कहते हुए वह देवता अप्रत्यक्ष हो गयीं।

दूसरे दिन राजमहल के उत्सव में चन्द्रमुखी ने भी भाग लिया। उस ने वह काँचन के जूते पहनने थी। नाचने के लिए राजकुमार ने बालेन्दू की तरह चमकने वाली चन्द्रमुखी को चुन लिया। उत्सव के बाद चन्द्रमुखी वापस चली। लेकिन भीड़ में उस का एक जूता खो गया। चन्द्रमुखी बहुत दुखी हुई।

किसी ने उस अनूठे जूते को देख लिया और उस को राजमहल में समर्पण किया। राजकुमार ने उस अलौकिक जूते को देख कर आश्चर्य में पड़ गया। और उस की मालकिन को खोजने का आदेश दिया गया

आखिर राज भृत्यों ने चन्द्रमुखी के पास उस अनूठे जूते का जोड़ा देख कर बात समझ ली। वे चन्द्रमुखी को राजमहल में ले गये।

राजकुमार आ गया और दोनों की आँखें चार हो गयी। पूर्णचंद्र की तरह सुन्दर चन्द्रमुखी के प्रथम दर्शन में ही उस पर राजकुमार का प्रेम हो गया। राजकुमार ने चन्द्रमुखी के साथ शादी की और उस को अपनी राणी बना लिया।

बच्चा, जो ईश्वर से प्रेम करता है, सभी लोग उस को प्यार करेगा।"

"बहुत अच्छी कहानी है, नानी।"

मज़दूरी

टी. वी. मुरलीधरन

"मुन्नू बेटा, चल, जा कर जयिलदार के यहाँ थोड़ा धान कूटना है। मेरा सिर दुखता है। बुखार भी है। पैसे लेकर दवा लेकर आ।"

माँ का यह वचन सुन कर झोपड़ी से मुन्नू बाहर कठिन ठंड़ लगती थी। बरफ गिर रही थी। उस की हड्डियों में ठंड़क घुस जाने लगी। ठंड़ से बचने के लिए उस ने सिर्फ दो कपड़े पहने थे।

यह ठंड़ा प्रभात उस के दिमाग में और कुछ प्रभात के चिन्ता लाया। ऐसे विचारों में पड़ कर वह बेगम साहिबा के घर पहूँच गया। बेगम साहिबा जयिलदार की पत्नी थी। वह एक मोटी औरत थी। बेगम साहिबा क्या बोलेगी। इस पर वह डर रहा था। मुन्नू जब घर के दूसरी ओर चल पड़ा तो बेगम साहिबा एक कम्बल शरीर पर लपेट कर आग के पास बैठती थी। उस ने मुन्नू को कमरे में बुलाया।

"क्यों मुन्नू, आज तेरी माँ कहाँ गयी। धान कूटना बाकी है।"

"माँ को बुखार है। और आज़ बहुत ठंड़ भी लगती है।"

वह वहाँ बैठा।

"हाँ, हाँ। क्यों बूखार नही होगा ? आज कौन कूटेग। धान ?"

मुन्नू ने मन में कहा—"तुम ही कूट लो। मेरी माँ से मोटी हो।"

लेकिन वह न बोला। दवा की प्रतीक्षा से बैठने वाली माँ का रूप उस के सामने आया। वह बोला—"माँ मुझे धान, कुटने के लिए भेजा है।"

"तू क्या कूटेगा। चल, थोड़ा कूट कर देखो तो।"

मुन्नू अकेले में धान डाल कर ज़ोर लगा कर कूटने लगा। कुछ देर कूटने के बाद वह रुक गया। वह धान वहीं छोड़ कर बेगम साहिबा से मिलने के लिये वहाँ से चल पड़ा।

वहाँ बेगम साहिबा रोटी खा रही थी। रोटी को बड़े-बड़े गोली वह मूह में खोंस रही थी। और पूछा—

"क्यों ? धान कुट चुके ?"

"भूख लगती है। ठंड़ भी लगती है।"

मुन्नू ज़मीन पर देख कर बोला। "हाँ, क्यों भूख न आएगी। तेरा खाना यहाँ ला रखा है !"

यह मुन्नू के मन में एक तीर के समान घुस गयी उस का मूह लाल हो गया। आँखों में खून भरा। लेकिन बूखार माँ उस के सामने आयी। वह शाँत हो गया। वह वहाँ से चल पड़ा। तब बेगम साहिबा बोली। रोटी खाएगा तो मज़दूरी न मिलेगी।"

कुछ देर के लिए रुका। लेकिन बीमार माँ। वह लंबी कदम रख कर दूसरी ओर चला। कुछ धान कुटने के बाद फिर बेगम साहिबा से मिला।

"बेगम साहिबा, और कुछ बाकी है। कुछ पैसा दो। माँ के लिए दवा खरीदना है।"

"पैसा कल ही मिलेगा।" बेगम बोली।

उस का खून और एक बार चढ़ गया। लेकिन बीमार माँ ! वह चुप हो गया।

कुछ धान चोरी कर लेगा। नहीं। चोरी करना बुरा है। मैं कभी चोरी न करूँगा। वह उग्र स्वर से बोला—"साहिबा।"

वह आराम कर रही थी। "फिर भी आया।" लेकिन मुन्नू के उग्र रूप ने उस को चुप कर लिया।

"रजनी" उस ने नौकरानी को बुलाया।

मुन्नू बोला "मेरी मज़दूरी दो।"

"क्या मज़दूरी। काम पूरा करो। तब मिलेगा।"

"मैं ने काम किया उस की मज़दूरी मुझे मिलना चाहिए।"

मुन्नू बोला।

रजनी आयी।

"जयिलदार को बुलाओ। बेगम बोली।

"जयिलदार बाहर गये।" रजनी लौट आयी।

"बाकी धान कौन कूटेगा।" बेगम ने पूछा। "रजनी, और कितना बाकी है।"

उस ने पैसा निकाल उस की ओर फेंक दिया। "मैं तुझे बताऊँगा। अभी ले जा।"

मुन्नू पैसा लेकर लंबी कदम रख कर वहाँ से दौड़ा।

स्वाधीनता के शत्रु

ओ. मम्मद, I B. Sc.,

स्वाधीनता क्या है? मानव–जीवन में हर एक आदमी अपने–अपने आदर्शों और विचारों के अनुसार जीवन बिताना चाहता है। भलाई की दृष्टि से, हमें ये बातें करने का जो अधिकार और अवकाश मिलता है, उसे स्वाधीनता कह सकते हैं। व्यक्ति, गाँव, राष्ट्र और संसार, इन सबों की सीमा में उस का विभिन्न अर्थ आर व्याप्ति है।

अगर एक व्यक्ति को अपनी स्वाधीनता कायम रखना चाहिए, तो उसे इस महान आशय के अर्थ और उद्देश्य को अच्छी तरह समझना चाहिए। स्वाधीनता का अगर हम दुरुपयोग करते, तो जीवन कठिन होगा। एक व्यक्ति के जीवन में स्वाधीनता के शत्रु, अशुभाप्ति विश्वास, दूसरों की सुविधाओं का अविचार स्वेच्छानुसार जीवन बिताना आदि है।

स्वाधीनता का मूल्य, एक देश के लिए सब से बड़ा है। इतिहास में सौ–सौ उदाहरण है, जहाँ पराधीनता के कारण मनुष्यता को खूब कष्ट सहने पड़े थे। अगर संसार के सारे देश, आज़ाद नहीं हैं, तो शांन्ति और उन्नति का कोई अर्थ नहीं रहता। इस लिए लोकपरिचय और इतिहास की घटनाओं से सबित है कि, संसार की उन्नति के लिए स्वाधीनता कितना मुख्य है। संसार के एक विभाग को पराधीनता में डालकर, फायदा उठाने के लिए जो देश परिश्रम कर रहे थे वे सब अब निराश है।

स्वाधीनता के कई शत्रु रहते हैं। पहले पहल, एक स्वतंत्र देश की असावधानी स्वाधीनता का सहज शत्रु है। अंग्रेज़ी में ऐसा कहा जाता है, "Eternal vigilence in the price of liberty" इस बात का असहनीय फल, हम, भारतीयों ने अभी भोगा है। भारत चीन से गाढ़ी मित्रता में था। इस महान देश के साथ, भारत ने पंचशील का नारा बुलंद किया। साथ ही, भारत विश्वशान्ति को पाने के प्रयत्न में लीन रहा था। ऐसी एक परिस्थिति में, भारत कुछ असावधान रहा, यह तो साधारण बात है। एक शान्तिपूर्ण भविष्य को देखते–देखते, भारत संतुष्ट था। लेकिन फल क्या हुआ? चीन ने भारत पर हमला किया। हमारी असावधानी के लिए हम ने भारी दाम लौटा दिया। इस से व्यक्त है कि स्वाधीनता का सब से भयंकर शत्रु असावधानी है। इस लिए हमें चाहिए कि देश के हर एक नागरिक प्रबल, रहे, शक्तिशाली रहे, तैयार रहे, यों, देश सुरक्षित होगा।

गृह कलह और नागरिकों के बीच एकता का अभाव, स्वाधीनता के और भयानक दुशमन है। हमारे राष्ट्रपिता गान्धीजी कहा करते थे, कि भारत की परतन्त्रता का कारण अंग्रेज़ों की शक्ति नहीं बल्कि हमारे देश के गृह कलह और एकता का अभाव था। यदि हम, भाषा, जाति, राज्य और धर्म का नाम लेकर एक दूसरे से लड़ाई शुरू करें, तो, हमारे शत्रु, जो मौका देखते रहते है झपट आएँगे और हमारी स्वाधीनता का पता भी न रहेगा। सदियों की पराधीनता से, हमें इस शत्रु का खूब परिचय है। जब कभी, कोई देश गृह कलह से या एकता के अभाव से दुर्बल रहा है, शत्रु ने उस पर आक्रमण किया है। फ्रान्स और प्राचीन चीन का उदाहरण हमारे सामने हैं।

एक देश के नागरिक भी, अपने देश के शत्रु बन सकते है। देश भक्ति न होने के कारण वह अपने देश को शत्रुओं के हाथों में फँसा दे हैं। वह शत्रु के पक्ष में मिल कर अपने महान देश के रहस्यों की खबर देते है। यों, शत्रुओं के लिए देश को अपने काबू में लाना आसान होता है। ऐसे देशद्रोही लोगों ने कई देशों की स्वाधीनता का नाश किया है। इतिहास में, सब से पहले ग्रीस–देश का उदाहरण हमें मिलता है। फ्रांस के विरुद्ध जब युद्ध हो रहा था, तो एक देश–द्रोही ग्रीक आदमी ने शत्रु पक्ष में जा कर अपने देश को शत्रुओं के हाथों में सौंप दिया। इस लिए ये देश–द्रोही, स्वाधीनता के प्रबल–शत्रु है। इन के बारे में हमें सावधान रहना चाहिए।

इस प्रकार देखने से मालूम हो जाता है कि असावधानी गृह कलह, एकता का अभाव और देश–द्रोही लोग स्वाधीनता के शत्रु हैं। ये किसी प्रबल देश को भी परतंत्र बनाते हैं। अगर स्वाधीनता की रक्षा होनी है तो इन चारो बातों के बारे में हमें सावधान रहना चाहिए।